प्रातः क्लास 18/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओमशांति। सिर्फ बाप को ही याद करते हो या और भी कुछ याद आता है; क्योंकि बच्चों को स्थापना भी याद होनी है और विनाश भी याद करना है। पालना भी याद होनी है; क्योंकि साथ-2 इकट्ठा चलता है ना। जैसे कोई बैरिस्टरी पढ़ते हैं तो उनको मालूम है मैं बैरिस्टर भी बनूँगा, घर भी बनाऊँगा। बैरिस्टरी की पालना भी तो करेंगे ना। जो भी पढ़ेगा उनका नज़ारा आगे रहेगा। तुम जानते हो हम अभी स्थापना कर रहे हैं। पवित्र .... नई दुनिया स्थापन कर रहे हैं। इसमें योग बहुत ज़रूरी है। याद से ही हमारी आत्मा जो पतित बन गई है वह पावन बनेगी। तो हम पवित्र बनकर पवित्र दुनिया में जाकर राज्य करेंगे। यह बुद्धि में आना चाहिए। सभी इम्तहानों में सबसे बड़ा इम्तहान वा सभी पढ़ाइयों से ऊँच है। पढ़ाई तो अनेक प्रकार के होते हैं ना। वह तो सभी मनुष्य मनुष्य को पढ़ाते हैं और वह सभी पढ़ाइयाँ इस दुनिया के लिए हैं। पढ़कर फिर उनका फल यहाँ ही पावेंगे। बैरिस्टर वा कुछ भी बनेंगे फल यहाँ ही पावेंगे। तुम बच्चे जानते हो इस बेहद की पढ़ाई का फल हमको नई दुनिया में मिलना है। वह नई दुनिया कोई दूर नहीं है। अभी संगमयुग है। नई दुनिया में ही हमको राज्य करना है। बाप की याद से ही आत्मा प्योर बनेगी। फिर यह भी याद रहना है हम पवित्र बनेंगे तो फिर इस अपवित्र दुनिया का विनाश भी ज़रूर होगा। सभी पवित्र नहीं बनेंगे। तुम बहुत थोड़े हो, जिनकी ताकत है। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ताकत अनुसार ही सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी बनते हैं। ताकत तो हर बात में चाहिए। यह है ईश्वरीय माइट। इनको योगबल की माइट कहा जाता है। बाकी और सभी है जिस्मानी माइट। यह है रूहानी माइट। बाप कल्प-2 कहते हैं हे बच्चो मामेकं याद करो। सर्वशक्तिवान बाप को याद करो। वह तो एक ही बाप है। उनको याद करने से ही आत्मा पवित्र बनेगी। यह बहुत अच्छी बातें हैं धारण करने की। जिनको यह निश्चय नहीं है कि हमने 84 जन्म लिए हैं उनकी बुद्धि में यह बातें बैठेंगी नहीं। जो सतोप्रधान दुनिया में आये थे वे अभी तमोप्रधान में हैं। वही आकर जल्दी निश्चय बुद्धि होंगे। कुछ भी नहीं समझते हैं। तो पूछना चाहिए। पूरी रीति समझें तो बाप को याद भी करें। समझेंगे नहीं तो याद भी नहीं कर सकेंगे। यह तो सीधी बात है। हम आत्माएँ जो सतोप्रधान थीं वही फिर अभी तमोप्रधान बने हैं। जिनको यह निश्चय होगा यह कैसे समझें कि हम 84 जन्म लेते हैं वा बाप से वर्सा लिया हुआ है, तो वह पढ़ाई में पूरा ध्यान ही नहीं देंगे। समझा जाता है इनके तकदीर में न है। कल्प पहले भी नहीं समझा था। इसलिए याद कर न सकेंगे। यह है ही भविष्य के लिए पढ़ाई। न पढ़ते हैं तो समझा जाता है कल्प-2 नहीं पढ़े थे अथवा थोड़ी मार्क्स से पास हुये थे। स्कूल में भी बहुत फेल होते हैं। नम्बरवार ही पास होते हैं। जो होशियार हैं वह पढ़कर फिर पढ़ाते भी हैं। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों का सर्वेंट हूँ। बच्चे भी कहेंगे हम भी सर्वेंट हैं। हरेक भाई-बहन का कल्याण करना है। बाप हमारा कल्याण करता है, हमको फिर औरों का कल्याण करना है। सभी को यही समझाना है बाप को याद करो तो पाप कट जायें। जितना-2 जो बहुतों को पैगाम पहुँचाते हैं वह बड़ा पैगम्बर कहेंगे। बहुतों को पैगाम देते हैं, उनको ही महारथी अथवा घोड़े सवार कहा जाता है। प्यादे फिर भी प्रजा में चले जाते। इसमें भी बच्चे समझते हैं कौन-2 साहुकार बन सकेंगे। यह ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिए। तुम बच्चे सर्विस के लिए निमित्त बने हुये हो। सर्विस के लिए ही जीवन दे दिया है तो पद भी ऐसे पावेंगे। उनको मित्र-संबंधियों आदि की कोई परवाह नहीं है। मैं अपना हाथ-पांव वाला हूँ। बाँधा तो नहीं जा सकता। अपन को स्वतंत्र रख सकते हैं। मैं क्यों बंधन में फंसूँ। क्यों नहीं बाप से अमृत लेकर अमृत का दान ही दूँ। मैं कोई रीढ़-बकरी थोड़े ही हूँ जो कोई हमको बांधे। क्या करेंगे? शुरू में तुम बच्चों ने कैसे अपन को छुड़ाया। रड़ियाँ मार, हाय हाय कर बैठ गये। तुम कहेंगे हमको क्या परवाह है। हमको तो स्वर्ग की स्थापना करनी है या यह काम बैठ करें? वह मस्ती चढ़ती जाती है, जिसको मौलाई मस्ती कहा जाता है। हम मौला के संतान ... ना। तुम जानते हो मौला से हमको क्या प्राप्त होता है। मौला हमको पढ़ा रहे हैं। नाम तो उनके बहुत हैं; परंतु कोई-2 नाम बहुत मीठा होता है। अभी हम मौलाई मस्त बने हैं। बाप डायरैक्शन तो बहुत सहज

देते हैं। बुद्धि भी समझती है बरोबर हम बाप को याद करते-2 सतोप्रधान बन जावेंगे और विश्व के मालिक भी बनेंगे। यह तात लगी हुई है। बाप तो हरदम याद में रहना चाहिए। सामने बैठे हो ना। यहाँ से बाहर निकले और भूल जावेंगे। यहाँ जितना नशा चढ़ता है उतना बाहर में नहीं रहता। भूल जाते हैं। तुमको भूलना न चाहिए; परंतु तकदीर में नहीं है तो यहाँ बैठे भी भूल जाते हैं। बच्चों के लिए म्युज़ियम वा गांवड़ों में सर्विस करने लिए प्रबंध हो रहा है। टाइम तो पड़ा है ना। बाप तो कहते हैं जल्दी-2 करो; परंतु ड्रामा में जल्दी हो नहीं सकता। बाबा तो बहुत कहते रहते हैं यह यह बनाओ। गांवड़ों में सर्विस करने जाओ। इसके लिए नक्शे ज़रूर चाहिए; परंतु फिर समझते हैं बिचारों पर काम बहुत है। बाप तो कहते हैं ऐसी मशीनरी हो जो हाथ डाले और चित्र तैयार हो निकले। यह भी बाप समझाते रहते हैं। अच्छे-2 बच्चों को माया और ही नाक से अच्छी रीत पकड़ती है। जो अपन को महावीर समझते हैं उन्हों को ही माया के बहुत तूफान आते हैं। फिर वह किसकी भी परवाह नहीं करते हैं। छिपाये लेते हैं। आंतरिक दिल सच्चा नहीं है। सच्चे दिल वाले ही स्कॉलरशिप लेते हैं। शैतानी दिल चल न सके। शैतानी दिल से अपना ही बेड़ा गर्क करते हैं। सबको शिवबाबा से काम है। यह तो सबसे पतित है। फिर यही पहला नम्बर पावन बनते हैं। यह तो तुम सा॰ भी करते हो। उनको भी बनाने वाला शिवबाबा है। शिवबाबा को याद करें तब ऐसा बनें। बहुत जगह बच्चे लून पानी हो रहते हैं। अपना ही खाना खराब करते हैं। देह अभिमानी हो रहते हैं। जो महारथी बनते हैं उनको माया और अच्छी रीत नाक से पकड़ती है। लून पानी भी अच्छे-2 अनन्य ही बनते हैं। माया एकदम नाक से पकड़ लून पानी कर देती है। फिर कोई काम के ही नहीं रहते। ..... ही खत्म हो जाती है। बाबा समझते हैं माया बड़ी जबरदस्त है। जैसे चूहा काटता है तो मालूम भी नहीं पड़ता है। माया भी ऐसी मस्त चुहरी है जो महारथियों को ऐसा आराम से काटती है जो उनको कुछ पता भी नहीं पड़ता है। इसलिए बाबा कहते हैं महारथियों को ही खबरदार रहना है। वह खुद समझते नहीं हैं कि हमको माया ने गिरा दिया है। लून पानी बना दिया है। समझना चाहिए लून पानी होने हम बाप की सर्विस कर न सकेंगे। अंदर ही जलते रहते हैं। देह अभिमान है तो जलते हैं। वह अवस्था तो है नहीं। याद का जौहर भरता नहीं हैं। इसलिए बहुत खबरदार रहना चाहिए। माया बड़ी तीखी है। तुम्हारा मेहनत आधा तो एकदम खत्म कर देती है। जब तुम युद्ध के मैदान में हो तो माया भी छोड़ती नहीं है। आधा मेहनत तो ज़रूर खलास कर ही देती है। किसको भी पता नहीं पड़ता है। कई अच्छे-2 बैठे-2 भी पढ़ाई बंद कर और घर बैठ जाते हैं। अच्छे-2 नामी-गिरामी जो हैं उन पर माया का वार जास्ती होता है। समझते हुये भी बेपरवाह चलते रहते हैं। थोड़ी बात में झट लून पानी हो पड़ते हैं। बाप समझाते हैं देह अभिमान के कारण ही लून पानी होते हो। सर्विस को धोखा होता है। बाप कहते यह भी ड्रामा। जो कुछ देखते हैं कल्प-2 ड्रामा चलता रहता है। कब नीचे-ऊपर अवस्थाएँ होती रहती है। कब ग्रहचारी बैठती है। कब तो खूब खुशखबरी सर्विस के अच्छे-2 लिखते रहते हैं। नीचे ऊपर होता रहता है। कब हार, कब जीत। पाण्डवों की माया से कब हार, कब जीत होती है। अच्छे-2 महारथी भी हिल जाते हैं। माया एकदम जैसे कि तवाई बना देती है। कई मर भी पड़ते हैं। इसलिए जहाँ भी रहो सर्विस करते रहो। तुम निमित्त बने हुये हो सर्विस के लिए। तुम लड़ाई के मैदान में हो ना। जो बाहर वाले गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं यहाँ वालों से बहुत तीखे चले जाते हैं। माया के साथ पूरी युद्ध चलती रहती है। सेकण्ड व सेकण्ड कल्प पहले मिसल तुम्हारा पार्ट चलता रहता है। तुम कहेंगे 4900 वर्ष पास हुये हैं। बाकी 7/8 वर्ष हैं। इतना समय पास्ट हो गया। क्या-2 हुआ है वह भी बुद्धि में है। सारा ज्ञान बुद्धि में है। जैसे बाबा में ज्ञान है, इस दादा में भी आना चाहिए। बाबा बोलते हैं तो ज़रूर दादा भी बोलते होंगे। तुम बच्चे भी जानते हो कौन-2 अच्छे दिल साफ हैं। दिल साफ जो हैं वही दिल पर चढ़े रहते हैं। उनमें लून पानी का स्वभाव ही नहीं रहता। सदैव हर्षित

रहते हैं। उनका मूड कब नहीं फिरेगा। यहाँ तो बहुतों की मूड ऐसी फिर जाती है बात मत पूछो। सिकल जैसे भंगी, चुहरे मिसल बन जाती है। माया ने इस समय सभी को चुहरे बना दिया है। मूत पलीती चुहरे हैं ना। अपन को चुहरी कहते हैं। बाबा हम मूत पलीती को आकर शुद्ध बनाओ। कहते भी हैं हम पतित हैं। पतित उस चुहरे से भी बतदर होते हैं। डिविल चुहरे बन जाते हैं; क्योंकि विकार में भी जाते हैं। विकार में भी जाते किचरा भी साफ करते हैं। उनकी है सबसे जास्ती अधम गति। अभी पतित-पावन बाप को बुलाया है। आकर मूत पलीती कपड़ धोओ। बाप कहते हैं बच्चे मुझे याद करते रहो, तो तुम्हारे कपड़े साफ हो जावेंगे। मेरी श्रीमत पर चलते रहो। न चलने वाले का कपड़ा साफ नहीं होगा। आत्मा शुद्ध होगी ही नहीं। बाप तो दिन-रात इस पर ज़ोर देते रहते हैं अपन को आत्मा समझो। देह अभिमान में आने से ही तुम घुटका खाते हो। जितना-2 ऊपर चढ़ते जाते हो खुशी जमा होती जाती है। हर्षित मुख रहता है। बाप जानते हैं अच्छे-2 फर्स्ट क्लास हैं; परंतु अंदरूनी हालत देखो तो गल रहे हैं। देहअभिमान के आग में जल रहे हैं। समझते नहीं हैं यह बीमारी कहाँ से आई। बाप कहते हैं देहअभिमान से यह बीमारी आती है। देहीअभिमानी को कब बीमारी नहीं होगी। बहुत अंदर में जलते रहते हैं। बाप तो कहते हैं बच्चे देही अभिमानी भव। पूछते हैं यह रोग क्यों लगा है? बाप कहते हैं यह देहअभिमान की बीमारी ऐसी है बात मत पूछो। कोई को यह बीमारी लगती है तो एकदम चचर होकर लगती है। छोड़ती ही नहीं। श्रीमत पर न चल अपनी देह अभिमान में चलते हैं। तो चोट बड़ी ज़ोर से लगती है। बाबा के पास तो सभी समाचार आते हैं। कैसे-2 गिर पड़ते हैं। जैसे चंदा। अभी कहती है ज्ञान आदि यह सभी गपोड़े हैं। धोखेबाज़ी है। वेद-शास्त्र आदि पढ़नी चाहिए। देखो माया की चोट कैसी ज़ोर से लगती है। एकदम भक्ति मार्ग में चली गई तो बेड़ा ही गर्क हो जावेगा ना। कहती है भगवान तो है ही सर्वव्यापी। हम तो यहाँ फांसी में आ गई थी। माया कैसे नाक से पकड़ कर गिरा देती है। बुद्धि बिल्कुल ही मार देती है। ऐसे बहुत निकलेंगे जो कहेंगे ज्ञान कुछ है नहीं। ऐसे-2 संशय बहुतों को पड़ती हैं। जब कोई बहुत तंग करते हैं तब मुरली में नाम डालते हैं। भगवान को बुलाते हैं आकर हमको पत्थर बुद्धि (से) पारस बुद्धि बनाओ। और फिर उनके भी विरुद्ध हो तो क्या गति होगी? एकदम गिरकर पत्थर बुद्धि बन जाते हैं। बच्चों को यहाँ बैठे, उठते-बैठते यही खुशी रहनी चाहिए। स्टूडेंट लाइफ इज़ दी बेस्ट लाइफ है। बाप कहते हैं इन (बगै)र कोई पढ़ाई ऊँच है क्या? दी बेस्ट तो यही है। 21जन्मों का फल देते हैं। तो ऐसी पढ़ाई में कितना अटेन्शन देना चाहिए। कोई तो बिल्कुल अटेन्शन नहीं देते हैं। माया नाक-कान काट लेती है। बाप खुद कहते हैं आधा कल्प इनका राज्य चलता है। तो ऐसा पकड़ लेती है जो बात मत पूछो। इसलिए बहुत खबरदार रहो। एक/दो को सावधान करते रहो। शिवबाबा को याद करो। नहीं तो माया कान-नाक काट लेगी। फिर कोई काम के न रहेंगे। बहुत समझते भी हैं हम ल॰ना॰ का पद पावें, इम्पॉसिबल है! इसके लिए तो पुरुषार्थ करना फालतू है। थक कर फां हो जाते हैं। माया से हार खा लेते हैं। एकदम किचड़े में जाकर पड़ते हैं। सर्विस के बदली डिस सर्विस करने वाले बहुत हैं। हरेक सेंटर पर ऐसे निकल पड़ते हैं। देखो, हमारी बुद्धि बिगड़ती है तो समझना चाहिए माया ने नाक से पकड़ा है। याद की यात्रा में बहुत बल है। बहुत खुशी भरी हुई है। कहते भी हैं खुशी जैसी खुराक नहीं। दुकान में ग्राहक आते रहते हैं। कमाई होती रहती है तो कब उनको थकावट नहीं होगी, भूख नहीं मरेगी। बड़ी खुशी में रहते हैं। तुमको भी अथाह बेशुमार धन मिलता है। तुमको तो बहुत खुशी रहनी चाहिए। देखना चाहिए हमारी चलन दैवी है या आसुरी है। समय बहुत थोड़ा है। अकाले मृत्यु की भी जैसे रीस है। एक्सीडेंट आदि देखो कितने होते हैं। तमोप्रधान बुद्धि होती जाती है। बरसात ज़ोर से पड़ेगी उनको भी कुदरती एक्सीडेंट कहेंगे। मौत सामने आया कि आया। लिखते भी हैं, समझते भी हैं, ऐटॉमिक बॉम्ब्स की लड़ाई झट छिड़ जावेगी। ऐसे खौफनाक काम करते हैं, तंग कर देंगे तो फिर लड़ाई भी छिड़ जावेगी। अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।